



अनमोल वाणी

कबीर

कवि परिचय :

कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था । कहा जाता है कि वे एक तालाब के किनारे मिले । एक जुलाहा दंपति ने उनका पालन पोषण किया । वे कपड़ा बुनने का काम करते थे । ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन बड़े अनुभवी थे । बुद्धि, विवेक से काम लेते थे । बहुत बातें जानते थे । वे सभी धर्मों को बराबर मानते थे । वे ईश्वर के निर्गुण, निराकार रूप को मानते थे । उस समय धर्म और समाज में बड़ी गड़बड़ी थी । कबीर ने अपनी वाणी से उसे दूर करने का प्रयास किया । लोगों में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद भाव था । विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में झगड़ते थे । बाह्य आडंबर, अंधविश्वास फैल गया था । कबीर जाति भेद, मूर्ति पूजा, बाहरी आडंबर आदि का विरोध करते थे । वे कहते थे कि सब मनुष्य बराबर हैं । वे बाहरी धार्मिक कर्म काण्ड की अपेक्षा भक्तिभाव पर बल देते थे । वे तीर्थ व्रत, जप-तप, मूर्ति-पूजा आदि बाहरी काम छोड़ सच्चे दिल से भगवान की भक्ति करने को कहते थे । वे सदाचार, सच्चाई, भाईचारे, धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करते थे । कबीर का व्यक्तित्व सादा-सीधा पर बड़ा प्रभावशाली था । उनकी वाणियों को उनके शिष्यों ने 'बीजक' नामक ग्रंथ में संगृहीत किया । उनकी भाषा मिश्रित खड़ीबोली है, जो उस समय जन समाज में प्रचलित थी । वे अपने गुरु रामानंद स्वामी का बड़ा आदर करते थे ।

दोहे

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै, साँच है, ताके हिरदै आप ॥
जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।
तोकु फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ॥
धीरे-धीरे रे मना, धीरे-धीरे सब कुछ होय ।
माली सीचें सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ॥

भाग-2

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
गद्य विभाग			
1.	मधुर भाषण	गुलाब राय	39
2.	बोध	प्रेमचंद	47
3.	देशप्रेमी संन्यासी	संकलित	67
4.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	72
5.	जननी जन्मभूमि	संकलित	88



विषय - सूची

भाग - 1

क्र.सं.	विषय	कवि	पृष्ठ सं.
पद्य विभाग			
1.	अनमोल वाणी :		1
	दोहे	कबीरदास	1
	पद	सूरदास	5
	दोहे	तुलसीदास	9
	दोहे	रहीम	12
2.	मनुष्यता	मैथिली शरण गुप्त	16
3.	एक तिनका	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	20
4.	चाँद का झिंगोला	रामधारी सिंह 'दिनकर'	24
5.	नीड़ का निर्माण फिर फिर	हरिवंशराय बच्चन	27
6.	काँटे कम-से-कम मत बोओ	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	33



प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षण पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 के मुताबिक नई पाठ्य-पुस्तकें लिखी जा रही हैं। इसमें भाषा-शिक्षण को नई दिशा देते हुए उसे अधिक उपयोगी बनाया गया है। हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसको सीखने के लिए खास कोशिश करनी है। इस पुस्तक में अनेक पाठ हैं जो मानवता, देशप्रेम, नैतिकता, कल्पना, उत्साह को बढ़ावा देते हैं। जीवन के साथ शिक्षा को जोड़ने का प्रयास है। वाचन, लेखन, पाठन की क्षमता बढ़ाने के लिए लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं।

शिक्षकों से विशेष अनुरोध है कि इस पुस्तक की मदद से विद्यार्थियों को सरल हिन्दी सीखने और इस्तेमाल करने का अभ्यास कराएँ।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

लेखक संपादक मंडल